ब्रासिलिया-ब्राज़िल। ज्ञानचर्चा के पश्चात भारत के यूनियन ट्रान्सपोर्ट मिनिस्टर नितिन गडकरी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कविता व ब्र.कु. मीता।

लुधियाना-पंजाब। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के कार्यक्रम में डिस्ट्रीक्ट एग्रीकल्चर ऑफिसर सरदार सुखपाल सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राज दीदी।

मुरादाबाद। द बार एसोसिएशन में 'खुशनुमा ज़िन्दगी के लिए न्यायिक क्षेत्र में राजयोग की भूमिका' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. पुष्पा दीदी,दिल्ली, सुप्रीम कोर्ट के रजिस्ट्रार ब्र.कु. एम.वी.रमेश, प्रभारी जनपद न्यायाधीश अरविंद कुमार, रिटायर्ड सत्र न्यायाधीश राकेश कुमार उपाध्याय, एडिशनल जज मनोज कुमार व बार एसोसिएशन के अध्यक्ष राकेश जी।

तिनसुकिया-असम। व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में बायें से ब्र.कु.रजनी, ब्र.कु. हीरल, ब्र.कु.योगिनी, आई.ओ.सी.एल. डिगबोई के एक्ज़ीक्युटिव डायरेक्टर अमिताभ मिश्र व ब्र.कु. मोहन।

राँची-बिहार। 'सफलता की कुंजी, आध्यात्मिक मूल्य एवं एकाग्रता' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए गिरीश रावल,डी.ए.जी.,महालेखाकार, जटाशंकर चौधरी,कृषि निदेशक, तनुजा पाणीग्रही,प्राचार्य,डी.ए.वी. पुनदाग, सुनीता कुमारी,प्राध्यापिका,मारवारी कॉलेज, ब्र.कु. भगवान, ब्र.कु. निर्मला व अन्य गणमान्य जन।

हरदोई-उ.प्र.। 121 भाई बहनों के अलौकिक जन्मोत्सव एवं दीपावली महोत्सव के कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. विद्या,कानपुर, ब्र.कु. रोशनी व ब्र.कु. भाई बहनें।

विचारों की तरंगें दूसरे तक तेज़ी से पहुंचती हैं

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

गतांक से आगे...

जैसे भावनाओं को या तरंगों को आप अंदर छोड़ते हैं, तो वो तरंग फिर वायब्रेट होकर के आपके पास ही आती है। ऐसे अगर हम निगेटिव तरंगों को छोड़ेंगे तो वही तरंगें हमारे पास वापिस आयेंगी, जो हमारी मानसिक शांति को भंग कर देंगी। इसलिए जितना हो सके उतने शुद्ध तरंगों को फैलाओ। एक बहुत ही सुंदर कहानी है कि किस प्रकार वो तरंगें हमारे पास वापिस आती हैं।

एक राजा था। उसका एक मित्र था, जो लकड़े का व्यापारी था। दोनों में बहुत अच्छी दोस्ती थी। बचपन के दोनों दोस्त थे। फिर भी वो दोस्ती दोनों की कायम रही। एक दिन वो लकड़े का व्यापारी अपने लकड़े के गोदाम में गया। सारा स्टॉक देखते-देखते चंदन के लकड़े के पास आया और देखा इतना सारा चंदन का लकड़ा पड़ा है। उसका बिज़नेस माइंड चलने लगा कि कितने पैसे मेरे इसमें रुके हुए हैं। अब ये पैसे निकलेंगे कैसे? इतना लकड़ा कौन खरीदेगा? बिना मतलब का इतना चंदन का लकड़ा क्यों खरीद लिया? ऐसे विचार चलने लगे। फिर उसके मन में विचार आया कि कोई अगर मरता है तो ...क्योंकि मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति ये है कि मन में पहले निगेटिव विचार आता है। उसके मन में विचार आया कि कोई साधारण व्यक्ति मरेगा तो इतना सारा चंदन का लकड़ा जलाने के लिए लेकर नहीं जायेगा। कोइ बड़ा व्यक्ति मरेगा तो उसको जलाने के लिए तो चंदन का ही लकड़ा लगायेंगे।

बड़ा व्यक्ति कौन है? राजा के सिवाय तो कोई और बड़ा व्यक्ति है नहीं। राजा उसका दोस्त था, मित्र था फिर भी लोभ लालच जहाँ आयी वहाँ मित्र को भी नहीं देखते। फिर उसके मन में विचार आया कि राजा की तो अभी उम्र ही नहीं है मरने की। तो कैसे वह मरेगा? अगर कोई आस-पास के प्रदेश वाले चढ़ाई करें, तब तो राजा मर सकता है। लेकिन आस-पास के सभी प्रदेश वालों के साथ राजा की अच्छी दोस्ती है। तो कोई उसके ऊपर चढ़ाई करने वाला भी नहीं है। यदि कोई उसको खत्म कर दे, तब तो वो मर सकता है। लेकिन खत्म कौन करेगा, सभी प्रजा उससे इतनी संतुष्ट है, इतनी खुश है कि कोई उसे खत्म क्यों करेगा? फिर उसके मन में विचार आया कि मैं ही उसको खत्म कर दूं। तो उसको जलाने के लिए चंदन के लकड़े यूज़ होंगे। मैंने यदि राजमहल में कहीं उसको मारा तब तो मुझे पकड़ लेंगे और मुझे सजा हो जायेगी। हाँ, जब मैं राजमहल में राजा के साथ जाता हूँ या कहीं बाहर भी जाता हूँ तो किसी को मेरे ऊपर शक होगा ही नहीं, क्योंकि सभी जानते हैं कि हमारी अच्छी दोस्ती है।

विचार कीजिए, व्यक्ति के विचार एक के बाद एक उसको कहाँ तक पहुंचा देते हैं। लेकिन राजा को मारने की हिम्मत उसमें थी नहीं। जब हिम्मत ही नहीं थी,तो वह क्या करेगा? विचार चलते रहे कि राजा मरे तो कैसे मरे। राजा मरे तो कैसे मरे.. ताकि मेरे चंदन के लकड़े खत्म हो जायें।

अब ये विचारों की तरंग, वहाँ राजा तक पहुंचती है। वहाँ राजा सोचता है कि ये जो मेरा मित्र लकड़े का व्यापारी है, इतना पैसे वाला है, लेकिन ये किसके लिए कमाता होगा? उसके आगे-पीछे कोई है तो नहीं, तो ये कमाई किसके लिए करता है। तब राजा के मन में विचार आया कि ऐसा भाई जिसके आगे-पीछे कोई है ही नहीं वो अगर मर जाये तो उसकी सारी प्रॉपर्टी राज्य को मिल जायेगी। राजा भी सोचने लगा कि ये मरे, तो कैसे मरे। ताकि इसकी सारी प्रॉपर्टी राज्यकोष में आ जाये। अब दोनों की इतनी गहरी दोस्ती, लेकिन अब दोनों जब एक-दूसरे के सामने आते हैं तो कौन सी भावना से आते हैं। वो दोस्ती का भाव, वो प्रेम का भाव समाप्त हो गया है। दोनों के मन में एक ही विचार आता है, वो सोचता है कि ये मरे तो कैसे मरे और दूसरा सोचता है कि ये मरे तो कैसे मरे? वायब्रेशन्स में जैसी तरंगें हमने छोड़ी वैसी ही तरंगें हमारे पास आती हैं। आखिर जब दोनों का मन बड़ा परेशान हो गया, तो रात-रात भर दोनों को नींद नहीं आती है। दोनों पास पलटते रहते हैं, नींद आती ही नहीं है। तब वो व्यापारी इतना परेशान होकर राजा के पास गया और राजा से हाथ जोड़कर के कहने लगा हे राजन! मैं माफी मांगने आया हूँ। राजा ने कहा माफी किस बात की, तुमने कौन सा गुनाह किया है? व्यापारी ने कहा कि मैंने कोई गुनाह किया नहीं है, लेकिन मेरे मन में एक कुविचार आ गया है। अब वो कुविचार निकलता ही नहीं है। मैं इतना परेशान हो गया हूँ जो पता नहीं कि मैं क्या करूं? रात-रात भर मुझे नींद नहीं आती है। उसने अपने मन के विचार राजा के सामने रखे। - क्रमशः

साक्षी होना ही - पेज 2 का शेष

आलिंगन कर लेता है, सुख को तो जल्दी से ओढ़ लेता है। सुख के साथ भी यही करना। वह भी बदली है। वह भी आया-गया मेहमान है।

अगर तुम सुख और दुःख दोनों को देख सको तो तुम्हारे भीतर जो अवस्था पैदा होगी उस अवस्था का नाम सहज है, साक्षी है। सहजयोगी है। पहले तो क्षण भर को बनेगी यह बात, मगर क्षण भर को बन तो गई। पहले तो क्षण भर को झलक मिलेगी साक्षी की, मगर उतनी झलक ही काफी है। स्वाद एक बार आ जाये, बस आप चकित हो जाओगे कि कितना अपूर्व रस बहता है। उस क्षण में! कैसी अमृत की धार बरस जाती है! न दुःख, न सुख- उस अवस्था को महासुख कहा है। न दुःख न सुख। ख्याल रखना, महासुख शब्द से धोखे में मत पड़ जाना। शब्द का कोई उपयोग तो करना ही पड़ेगा। कोई उस अवस्था को आनंद कहता है, मगर उसमें भी वही भूल हो जाती है, क्योंकि आप समझते हो आनंद यानी सुख की महा राशि।

बुद्ध का शब्द ज़्यादा उचित है। बुद्ध शांति शब्द का उपयोग करते हैं - परम शांति! सब शून्य हो जाता है। एक निर्विकार दशा। कुछ कहना उठता ही नहीं, कुछ गिरता नहीं, कुछ जाता नहीं! एक सन्नाटा! एक अपूर्व शांति। मगर महासुख उसमें है। सहज निर्माण शांत अवस्था...! और इस अवस्था को तुम जान लो तो तुम्हें पता चलेगाः न तो इसका कोई आदि है न अंत, न तो यह कभी शुरु होती है और न कभी इसका कोई अंत। और स्वभावतः जिसका आदि न हो अंत न हो, उसका कोई मध्यम भी नहीं होता। यह शाश्वत है। यह सनातन है। यही है सनातन धर्म! यही सहज है।

गया-ए.पी.कॉलोनी। 'भारतीय समाज में नारी का महत्व' विषय पर अपना विचार व्यक्त करने के पश्चात समूह चित्र में ब्र.कु.सुनीता तथा अग्रणी महिलाएं।

जमनीपाली-कोरबा(छ.ग.)। अम्बेडकर भवन,एन.टी.पी.सी. में आयोजित 'वाह ज़िन्दगी वाह' शिविर के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. ई.वी. स्वामीनाथन,मुम्बई।